हस्तकौशल/शिल्प (CRAFT)

समान्यतः कला और हस्तकौशल को एक ही अर्थ समझ लिया जाता है। परन्तु दोनो की प्रकृति में भिन्नता है। मानसिक या मनोवैज्ञानिक आधार पर विचार भाव और धर्म पक्ष पर आधारित बहुमूखी मानव व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति कला है। शिल्प या कौशल को कला नहीं कहा जा सकता क्योंकि शिल्प या कौशल का मुख्य बल कर्म और तकनीक पर होता है। उदाहरणार्थ चित्रकला मनुष्य के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का उपकरण है। उसे कला कहा जाना चाहिए। बढ़ई का काम हस्तकौशल समझा जाना चाहिए क्योंकि यह कर्म और तकनीक पर निर्भर होता है। कला की व्यापक वृहत परिभाषा में कौशल अंतर्निहित है। किसी भी मानवीय सृजन को कला कह सकते हैं। वास्तविकता तो यह है कि शिल्प या कौशल और कला के बीच अंतर तो महीन है। परन्तु दोनो की प्रकृति स्वरूप और उपयोगिता अलग है। इसलिए ये दो भिन्न विषय समझे जाते हैं। हस्तकौशल और कला में अंतर का अध्ययन करने के पूर्व हस्तकौशल की प्रकृति और स्वरूप को समझना आवश्यक है। जिसे निम्न बिंदुओ से प्रस्तुत किया जा रहा है।

- **कार्यारंभः**- किसी हस्त कार्य को आरंभ करने से पूर्व शिल्पी को यह पता होना चाहिए कि उसे अपने कर्म से क्या निर्मित करना है। उदाहरणार्थ यदि किसी शिल्पी को लक्ष्मी की मूर्ति बनानी है तो लक्ष्मी जी की मूर्ति का आकार स्वरूप उसके हृदय में पूर्वाभ्यास और पूर्वानुभव के कारण अंकित करता है। उसे लक्ष्मी जी के मूर्ति के परिप्रेक्ष्य में विभिन्न अंगो के अनुपात का ज्ञान होता है। अर्थात मूर्ति के माप के अनुपात विभिन्न अंगो की माप का ज्ञान रहना मूर्ति के माप का ज्ञान रहता है। मूर्ति के सांचे के परिणाम का भी उसे ज्ञान रहता है। तब वह अपना कार्य आरंभ करता है।
- **लक्ष्य का ध्यानः-** हस्तशिल्पी को कार्य करते हुए लक्ष्य तक पहुंचने के लिए विचार मंथन करता रहता है। अर्थात् उसे तय करना रहता है कि वह मिट्टी की मूर्ति बनाएगा या पलास्टर की शिल्पी को ज्ञात रहता है कि उसके सामने मिट्टी मौन

है। वह सांचे और उंगलियों के स्पर्श से आकार देकर अपने लक्ष्य को कैसे साकार करेगा। उसे इस बात का भी आभास रहता है। सांचे को कितना दबाव से दबाना है। ताकि मिट्टी का सही आकार प्रस्तुत हो। शिल्पी को प्रस्तुत वस्तु बनाने के पूर्व अन्यगढ़ कच्चे की आवश्यकता होती है।

- **रूप और वस्तु का वैश्म्यः-** हस्त कौशल के लिए प्रयुक्त सामग्रीयों का रूप और आकार अनिश्चित होता है। जिसे शिल्पी अपने कौशल द्वारा सवांरकर एक निश्चित दर्शनीय रूप देता है। जैसे मिट्टी से बर्तन या मूर्ति, लकड़ी से कुर्सी इत्यादि।
- हस्तकौशल की एक विशेषता यह भी होती है कि सभी अन्योन्याश्रीत होते हैं अर्थात् एक दूसरे पर निर्भर होते है। उदारणार्थ सूत कातना, कपड़ा बूनना, कपड़ा सीलना ये सभी हस्तकौशल एक दूसरे से संबंधित है।
- **प्रकारः-** हस्तकौशल कई प्रकार के हो सकते हैं। परन्तु सबका लक्ष्य समाजोपयोगी वस्तुओं का निर्माण करना होता है। हस्तकौशल के प्रकार को अग्रवत समझा जा सकता है।

कौशल के उदारण	कौशल का लक्ष्य
1. बढ़ई का काम, मोची का काम, दर्जी का नाम	मनुष्य के कार्य में आने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का निर्माण।
2. कृषि, बागवानी इत्यादि	उत्पादन करना (जीवन यापन हेतू)
3. शिक्षण और वैद्यक	शारिरीक और बौधिक विकास तथा ज्ञान का हस्तांतरण

विभिन्न प्रकार के शिल्पों का उद्देश्य अवश्य अलग-अलग होता है। परन्तु सभी मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। मनष्य की आवश्यकता शिल्पी को रचना या निर्माण के लिए प्रेरित करती है। आवश्यकता का स्वरूप निरंतर समयानुसार और अवसरगत होता है। जैसे दिवाली पर मिट्टी की मूर्तियां और खिलौने। विशिष्ट अवसर

पर कविता या संगीत। यदि सभी चित्रकार मूर्तिकार नृत्यकार तथा संगीतज्ञ मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति मात्र के लिए ही रचना करते हैं तो वे सब शिल्पी हैं।

शिल्प और कला के बीच अंतर को निम्न प्रकार में प्रदर्शित किया गया है।

कला	शिल्प
1. मन में भावों और विचारों की अभिव्यक्ति पर विशेष बल होता है। कर्म या तकनीक का द्वितीयक स्थान होता है।	क्रियात्मक, कर्म और तकनीक पर विशेष बल दिया जाता है।
2. आंतरिक आनंद, भावरस और सौंदर्य कला के प्राण तत्व है।	बह्य सौंदर्य और टिकाउ पन पर अधिक बल दिया जाता है।
3. पारलौकिक भावना धारणाओं को सर्वोपरी स्थान दिया जाता है। भूत वर्तमान और भविष्य के मूल्यों को वरयीता दी जाती है।	इहलौकिक या सांसरीक वर्तमान मूल्यों को महत्व दिया जाता है।
4. कला दर्शकों को भावरूप में विभोर कर देती हैं।	कौशल या शिल्प से निर्मित वस्तु के बारे में ग्राहक निःसंकोच गुणों और सीमाओं को व्यक्त करता है।
5. कला कलाकार से सृजन का प्रतिफल है। कलाकार अपनी सृजनात्मकता से जुड़ा होता है।	शिल्पी अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनायी गयी वस्तु होती है।
6. कला में विशिष्ट ध्येय धर्म के अनुरूप साधन कर्म या तकनीक भी अनिवार्य है।	शिल्पी में ध्येय या धर्म का अभाव होता है। परिश्रम मात्र पर ही शिल्प निर्भर रहता है।
7. यदि किसी कलाकृति की त्रुटि पूर्ण समीक्षा या पक्षपात भरी आलोचना हो जाए तो उस कृति की मूल्य हानी हो सकती है।	निर्मित वस्तुओं की आलोचना से शिल्पी वस्तुओं में ऐसा सुधार करता है कि उसकी मूल्य वृद्धि होती है।

Raju Kumar
(Guest Faculty)
Mob. No.- 8797037111
Woman's Training College
Mob No.- rajumanjay@gmail.com
B.Ed. 1st Year.
EPC – 2 (Drama Art and Education)
Topic:- हस्तकौशल/शिल्प (CRAFT)